

दौसा जिले में भूमि उपयोग एवं सतत् कृषि विकास का एक भौगोलिक अध्ययन

सारांश

भूमि उपयोग एवं सतत् कृषि विकास एक सिक्के के दो पहलु है। अध्ययन क्षेत्र में दोनों की स्थिति अच्छी है उन तहसीलों में आर्थिक-सामाजिक विकास अच्छा रहा है। जहां भूमि उपयोग में कृषि क्षेत्र की अधिकता है वहां सतत् कृषि विकास को उच्च स्तर की श्रेणी प्राप्त होती है जिसमें महवा व लालसोट तहसील सतत् कृषि विकास के लिए अग्रणीय रही है। यहां सिंचित जल एवं उत्पादित कृषि भूमि के साथ गहन कृषि प्रणाली पायी जाती है। अतः सतत् कृषि विकास की अवधारणा भूमि उपयोग के स्तर को इंगित करती है।

मुख्य शब्द : भूमि उपयोग, सतत् कृषि विकास, अध्ययन क्षेत्र, क्षेत्रफल, प्रतिशत, तहसीलवार अध्ययन, वर्ष।

प्रस्तावना

भूमि उपयोग द्वारा ही सतत् कृषि विकास को विकसित किया जा सकता है। भूमि उपयोग एवं कृषि विकास परिवर्तन के लिए जल संसाधन का भी योगदान अधिक रहा है इसी उद्देश्य की पूर्णता के लिए दौसा जिले में भूमि उपयोग एवं सतत् कृषि विकास का अध्ययन आवश्यक समझा गया है।

शोध उद्देश्य

1. दौसा जिले में भूमि उपयोग एवं सतत् कृषि विकास का अभिज्ञान।
2. तहसीलवार 2007–2017 का आंकलन करना।

शोध परिकल्पना

1. जनसंख्या वृद्धि का दबाव सर्वाधिक भूमि संसाधन पर रहा है।
2. जल समस्या के कारण भूमि उपयोग व सतत् कृषि विकास आवश्यक हो गया है।

विधि तन्त्र

प्रकाशित जिले के द्वितीय ऑकड़ों को व्यवस्थित कर उद्देश्य हेतु तालिकाओं द्वारा प्रतिशत मान में कमी व वृद्धि का स्तर प्राप्त कर तहसीलवार अध्ययन में शामिल किया है तथा सम्बन्धित आरेख एवं मनचित्र द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास रहा है। तहसीलवार वितरण एवं अध्ययन के लिए क्षेत्र एवं प्रतिशत लिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

दौसा जिले की अक्षांशीय स्थिति $26^{\circ} 22'$ से $27^{\circ} 14'$ तक तथा देशांतरीय स्थिति $76^{\circ} 8'$ से $77^{\circ} 4'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। 2011 के अनुसार 9 तहसीलों से युक्त इस जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग 21, 23, 148 व बाणगांगा नदी की उपस्थिति उल्लेखनीय है। जो मानचित्र-1 में दर्शाया गया है।

दौसा जिले का कुल क्षेत्रफल 3400 वर्ग किलोमीटर है। यहां की कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 16,34,409 व्यक्ति है।

साहित्यावलोकन

गुप्ता, पी.एल. (1990) ने जयपुर जिले के आधुनिकीकरण का 10 वर्षीय अध्ययन किया।

यादव, सत्यवीर (2000) ने धौलपुर जिले के कृषि पारिस्थितिकी का 10 वर्षीय अध्ययन किया।

महावर, गोपीलाल (2001) ने टोंक जिले के प्रमुख संसाधन विकास स्तर एवं पर्यावरण का दशकीय अध्ययन किया जिसमें प्रमुख संसाधन विकास स्तर ज्ञात किया।

मीना, क. डी (2002) ने जल संभरण क्षेत्रों का सामाजिक-आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय प्रभाव, भरतपुर जिले के विशेष संदर्भ में शोध अध्ययन किया अध्ययन किया।



जयनारायण गुर्जर
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत



अभिषेक वशिष्ठ
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
महर्षि दयानन्द सरस्वती
विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सैनी, शंकर लाल (2005) ने भरतपुर जिले की कृषि पारिस्थितिकी का अध्ययन किया।

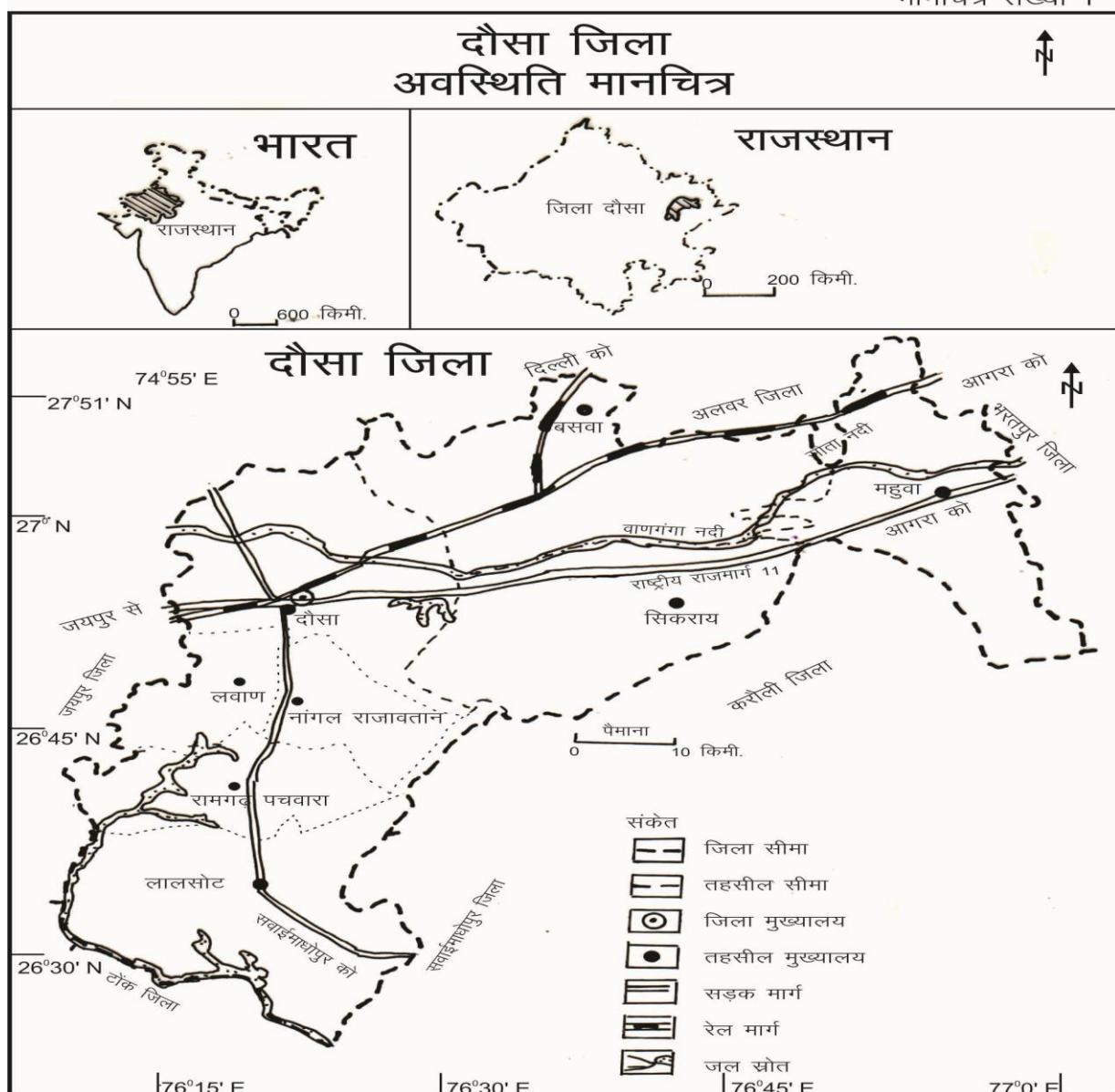
धाबाई, अशोक कुमार (2006) बारां जिले की मांगरोल तहसील में बदलता हुआ कृषि भूमि उपयोग पर शोध कार्य प्रस्तुत किया।

यादव, सुरेन्द्र (2006) झुंझुनूं जिले की कृषि पारिस्थितिकी का 10 वर्षीय अध्ययन किया, जिसमें प्रतीकात्मक गाँवों का भी चयन कर अध्ययन किया।

भूमि उपयोग

भारत में अखिल भारतीय मृदा एवं भूमि उपयोग सर्वेक्षण संगठन ने इस दिशा में प्रयास किया है, ग्रामीण भूमि उपयोग वहाँ की जलवायु, उच्चावच, मृदा तथा जनसंख्या वितरण से प्रभावित एवं नियन्त्रित होता है। भूमि उपयोग एवं कृषि वकास सम्बन्धित अभिलेख के आँकड़े जो कि तहसील और जिले पर आधारित होते हैं, भूमि उपयोग एवं सतत कृषि विकास सम्बन्धी अध्ययन के लिए भूमि उपयोग के आँकड़ों का वर्गीकरण पांच श्रेणियों में विभक्त किया हैं:-

मानचित्र संख्या 1



1. वन
2. कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि
3. जोत रहित भूमि, स्थाई चारगाह, अन्य गोचर भूमि, वृक्षों के झुण्ड या बाग बंजर कृषि योग्य भूमि
4. पड़त भूमि, अन्य पड़त भूमि तथा चालू पड़त भूमि
5. कृषि योग्य भूमि

भूमि उपयोग का अध्ययन इस प्रकार है:-

वन क्षेत्र

दौसा जिले में वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल बहुत कम है। तालिका संख्या-1 से स्पष्ट है कि वर्ष 2007 में 24725 हेक्टेयर भूमि पर वन क्षेत्र था जो 2017 में बढ़कर 26393 हेक्टेयर हो गया। विगत 10 वर्षों में 0.60 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

तालिका संख्या 1

दौसा जिला

भूमि उपयोग 2007–2017

भूमि उपयोग वर्गीकरण	वर्ष 2007		वर्ष 2017		दस वर्षीय परिवर्तन – /+
	क्षेत्रफल हेक्टेयर में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हेक्टेयर में	प्रतिशत	
वन	24725	7.24	26393	7.84	0.60
कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि	33859	9.92	29956	8.89	-1.03
कृषि अयोग्य भूमि	841	11.09	33639	9.99	-1.10
पड़ती भूमि	26926	7.89	24951	7.42	-0.47
वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	218032	63.86	221710	65.86	2.00
समस्त बोया गया क्षेत्रफल'	337319	98.81	346998	103.07	4.26
दो फसली क्षेत्रफल ग	120213	55.14	125288	56.51	1.37

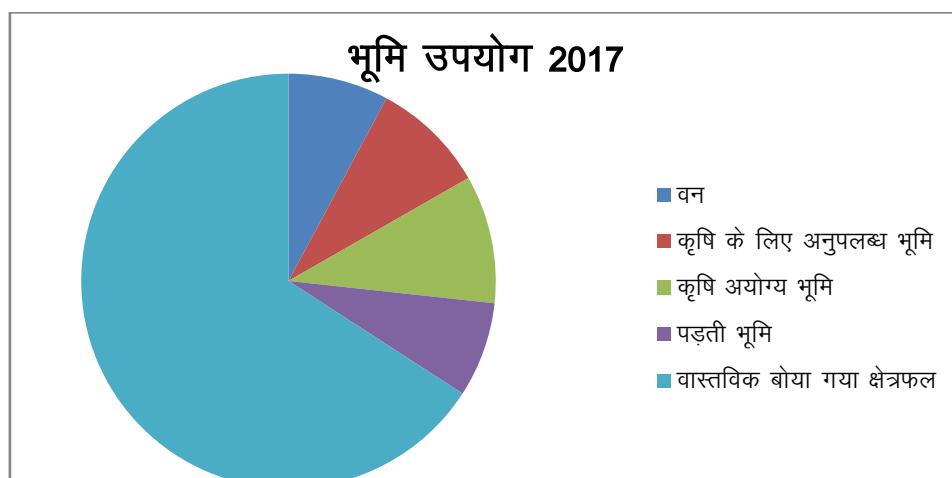
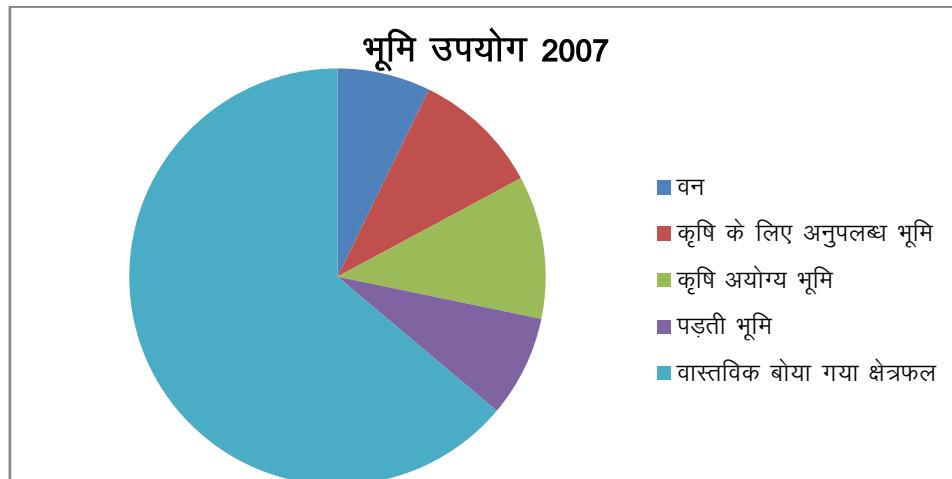
X वास्तविक बोया गये क्षेत्रफल का प्रतिशत

* कुल भौगोलिक क्षेत्रफल

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा—2008–2018

वर्ष 2017 में सबसे अधिक वन क्षेत्र 12.98 प्रतिशत लवाण तहसील में है। यह तालिका 2 द्वारा स्पष्ट प्रतिशत लालसोट तहसील में है, जबकि सबसे कम 8.08 है।

आरेख-1



कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि

इस श्रेणी के अन्तर्गत वह भूमि है जो कृषि फसलों के लिए उपयुक्त नहीं है। इसके तहत जिले में

वर्ष 2007 में 33859 हैक्टेयर भूमि थी जो वर्ष 2017 में घटकर 29956 हैक्टेयर रह गई क्योंकि भूमि पर

अतिक्रमण एवं अन्य गैर कृषि कार्यों में ली जाने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या 2

तहसीलवार दौसा जिला भूमि उपयोग—2017
(तहसील के भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार क्षेत्र व प्रतिशत में)

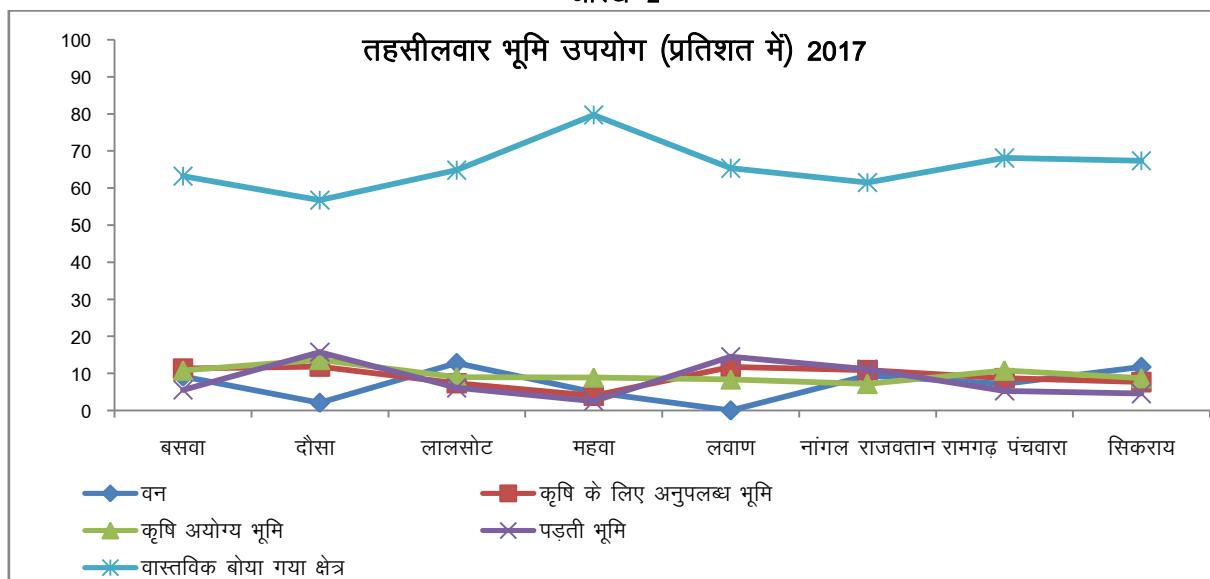
क्र. सं.	तहसील	वन		कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि		कृषि अयोग्य भूमि		पड़ती भूमि		वास्तविक बोया गया क्षेत्र		समस्त बोया गया क्षेत्र		दो फसली क्षेत्र		
		क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	क्षेत्र	प्रति.	
1	बसवा	5686	9.17	7016	11.32	6672	10.76	3432	5.54	39194	63.21	65583	105.78	26389	67.33	
2	दौसा	1076	2.07	6127	11.81	7090	13.66	8153	15.71	29451	56.75	35087	67.53	5636	19.14	
3	लालसोट	7134	12.78	4092	7.33	5028	9.00	3410	6.10	36179	64.79	54290	97.22	18111	50.06	
4	महवा	2334	4.87	1902	3.97	4271	8.92	1206	2.53	38164	79.71	65376	136.55	27212	71.30	
5	लवाण	0	0	1891	11.77	1347	8.39	2331	14.51	10494	65.33	14854	92.47	4360	41.55	
6	नांगल राजवतान	2157	9.40	2495	10.86	1646	7.17	2553	11.11	14117	61.46	20675	90.01	6558	46.45	
7	रामगढ़ पंचवारा	2173	7.16	2643	8.70	3267	10.76	1606	5.29	20682	68.09	35095	111.55	14413	69.69	
8	सिकराय	5833	11.75	3790	7.64	4318	8.70	2260	4.55	33429	67.36	56038	112.91	22600	67.32	
9	मण्डावर	मण्डावर तहसील के आंकडे महवा तहसील में सम्मिलित हैं।														

स्रोत: जिला सांस्थिकी रूपरेखा—2018

2007 में कुल क्षेत्रफल का 9.92 प्रतिशत भाग कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि के अन्तर्गत था। इसी प्रकार वर्ष 2017 में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि 8.89 प्रतिशत

रही है, वर्ष 2017 में सर्वाधिक भूमि 11.77 प्रतिशत लवाण तहसील में रही है। जबकि सबसे कम 3.97 प्रतिशत महवा तहसील में रही है।

आरेख-2



विगत दस वर्षों के अध्ययन से स्पष्ट है कि कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में 1.03 प्रतिशत की कमी हुई है। यह तालिका 1 द्वारा स्पष्ट है।

अकृषि योग्य भूमि

यह वह अकृषि योग्य भूमि है जिस पर फसलें उत्पादित नहीं होती इसके अन्तर्गत जिले के कुल क्षेत्रफल में से 33639 हैक्टेयर कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग में आने वाले क्षेत्र हैं; जैसे— आवास, सड़कें, कारखाने स्थापित किये जाते हैं जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.99 प्रतिशत है।

वर्ष 2007 में जिले में कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि उपयोग 11.09 प्रतिशत था। वर्ष 2017 में सबसे अधिक कृषि अयोग्य भूमि 13.66 प्रतिशत दौसा तहसील में थी, जबकि सबसे कम 7.17 प्रतिशत नांगल राजवतान तहसील में रही है।

पड़ती भूमि

अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में वर्ष 2007 में पड़ती भूमि का कुल क्षेत्रफल 26926 हैक्टेयर तथा 7.89 प्रतिशत था जो वर्ष 2017 में घटकर 24951 हैक्टेयर जो प्रतिशत में 7.42 रह गया। पड़ती भूमि दो

प्रकार की होती है। चालू पड़ती भूमि तथा अन्य पड़ती भूमि। तहसीलवार वितरण के अन्तर्गत वर्ष 2017 में सर्वाधिक पड़ती भूमि 15.71 दौसा तहसील में तथा सबसे कम 2.53 प्रतिशत महवा तहसील में रही है।

वास्तविक बोया क्षेत्र

सरकारी आँकड़ों के अनुसार दौसा जिले में 346998 हैक्टेयर भूमि कृषि योग्य है। वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल वर्ष 2007 में 63.86 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2017 में 65.86 प्रतिशत हो गया। जिले में वर्ष 2007 में 218032 हैक्टेयर भूमि में उत्पादन कृषि किया गया है, जिसमें सिंचित व असिंचित दोनों प्रकार के कृषि क्षेत्र सम्मिलित हैं।

वर्ष 2017 में सबसे अधिक वास्तविक बोया गया क्षेत्र 79.71 महवा तहसील में रहा है जबकि सबसे कम 56.75 प्रतिशत दौसा तहसील में रहा जिसके कारण कृषि क्षेत्र एवं कृषि विकास रहा है।

समस्त बोया गया क्षेत्र

इस वर्ग में शुद्ध बोये गये तथा दो फसली क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। दौसा जिले के समस्त बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत वर्ष 2007 के अनुसार 98.81 प्रतिशत था। जो वर्ष 2017 में बढ़कर 103.07 प्रतिशत हो गया जिसका कारण कृषि सुधार एवं कृषि विकास रहा है यह तालिका 1 द्वारा स्पष्ट है। विगत दशक में 4.26 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि सिंचाई एवं कृषि सुविधाओं में वृद्धि होने से हुई है।

तहसीलवार अध्ययन के अन्तर्गत वर्ष 2007 में समस्त बोया गया क्षेत्र 65376 हैक्टेयर महवा तहसील में रहा है जिसका प्रतिशत 136.55 रहा तथा सबसे कम क्षेत्र 35087 हैक्टेयर भूमि दौसा तहसील में रही, जो प्रतिशत में 67.57 प्रतिशत रही है। अतः तहसीलवार विषमता रही है।

दो फसली क्षेत्र

इस श्रेणी में शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के उस भाग को सम्मिलित किया जाता है जिसको एक फसली वर्ष में कम से कम दो बार फसल बोने के काम लिया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में दो फसली क्षेत्र वर्ष 2007 में 120213 हैक्टेयर रहा है यह 55.14 प्रतिशत रहा है, जबकि यह वर्ष 2017 में बढ़कर 125288 हैक्टेयर हो गया जो 56.81 प्रतिशत रहा है। विगत 10 वर्षों में इसमें 1.37 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि भूमि उपयोग सतत विकास की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सतत कृषि विकास का आधार भूमि उपयोग की वास्तविकता से सम्बन्धित तथा अनुकूल भूमि उपयोग द्वारा ही कृषि विकास सम्भव है। इसकी प्रमाणिकता के लिए दौसा

जिले के भूमि उपयोग के अन्तर्गत समस्त बोया गया क्षेत्र 4.26 प्रतिशत बढ़ा है।

इसी प्रकार वास्तविक बोया गया क्षेत्र विगत दशक में 2 प्रतिशत तथा दो फसली क्षेत्र 1.37 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि यहां का भूमि उपयोग सतत कृषि विकास में सहायक रहा है। तथा इसे अधिक सुदृढ़ करने के लिए कृषि विकास एवं भूमि उपयोग का नियोजन बहुत ही आवश्यक है।

सतत कृषि विकास की समस्याएं एवं सुझाव

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रदान है लेकिन यहां कृषि विकास की समस्याएं भी कम नहीं है। जिसमें मुख्यतः जल संसाधन की कमी, कृषि भूमि सुधार अपर्याप्त, कृषि तकनीकी का कम उपयोग घटता जोतों का आकार जंगली पशुओं, जानवरों तथा गौवंश द्वारा कृषि फसलों को नुकसान करना, कृषक की उदासीनता, कृषि सुरक्षा की कमी आदि समस्याएं सतत कृषि के लिए समस्याएं बनी हुई हैं। इसे व्यापक तथा सुदृढ़ करने के लिए जिले में कम विकसित तहसीलों को कृषि विकास हेतु अधिक प्रोत्साहन एवं अनुदान देना आवश्यक है। जिसमें भूमि उपयोग प्रबंधन, कृषि विकास योजनाएं संचालित करना, कृषि विकास एवं भूमि उपयोग की स्तर में सुधार हेतु जल संसाधन का प्रबन्धन करना। नवीन कृषि प्रणाली के लिए कृषक को जागरूक तथा शिक्षित करना, अधिकतम लाभ वाली कृषि फसलों के लिए कृषक को जानकारी देना, शुष्क फसली क्षेत्र का विस्तारकरना आदि। सुझाव सतत कृषि विचास एवं भूमि उपयोग की स्थिरता के लिए बहुत उपयोगी हो सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Anderson, J.R., (1976), Landuse Landcover Changes-A Framework for Monitoring, Journal of Research, U.S., Geological Survey, Volume 5, No. 3, 143-153

Lillesand, T.M. & Keifer, R.W., (1979), Remote Sensing and Image Interpretation, New York: John Wiley & Sons, Inc, 1-10

Baharadwaj, O.P. (1960), "Climate of the Bist Jullundur Doab (Punjab), With Reference to Variability of Rainfall", National Geographical Journal of India, B.H.U.Varanasi, vol-6. Part, 2.

बंसल, एस.सी. (1998) "एडवांस ज्योग्राफी इन इण्डिया" मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।

भल्ला, एल.आर. (1985) "राजस्थान का भूगोल", कुलदीप प्रकाशन, अजमेर

शर्मा, एच.एस., शर्मा एम.एल. (2006) राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

जिला सांख्यिकीय रूपरेखा (2008-2018)

जिला गजेटियर, दौसा

जिला जनगणना पुस्तिका-2011